Mr. Speaker: The question is:

"That this House agrees with the Eleventh Report of the Committee of Privileges presented to the House on the 30th November, 1966."

The motion was adopted.

14.48 hrs.

RE: QUESTION OF PRIVILEGE

Shri G. N. Dixit (Etawah): Mr. Speaker, when I heard....

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): He is really a Rebert Bruce!

Shri G. N. Dixit: When I heard Shri Limaye raise the issue of privilege which is the subject-matter of this Report, I applied for inspection of the writ petition papers, because I do not happen to be a member of this august Committee. I looked into the papers, I inspected them from A to Z. Shri Frank Anthony and Shri Parashar also happened to be there after I had reached there for the inspection. Having looked into the papers from A to Z, through every letter, I was amazed to find neither the Speaker's name nor that of any other Member, nor did I find the name of the firm, Aminchand Payarelal.

But I formed one impression. If hon. Members read this writ petition which is filed in the high Court carefully, I am sure every Member who has not got either some screw loose or is not otherwise deficient, will form the same opinion, that this Amrik Singh is a man who is either mad or is on the way to madness.

I will substantiate from his writ petition that this man appears to be off his head.

Mr. Speaker: Order, order. One thing I must say. This is not fair to say that except those members or that member who has some screw loose. That is not fair, that should not be said. Whoever might differ from us, from another member, or from the House in any extreme, should not be imputed such things. That is not good. That he should withdraw.

Shri G. N. Dixit: I withdraw it. I bow to your ruling.

I am reading para 19 on page 85. What does this man say:

"That after the conviction of the Petitioner on the basis of the evidence produced by the Respondents, fully accepted by all the assessors and the hon'ble Sessions Judge, the Petitioner was sentenced to death' upon the charge of murder and to 7 years plus 6 months rigorous imprisonment on the remaining three charges of attempted murder and suicide . . .

"That the Petitioner's appeal against the above mentioned sentence and the reference made by the Respondents for the confirmation of the 'death sentence' came up before Your Lordships' Division Bench consisting of 3 eminent Judges including the present Chief Justice....before whom the Respondent strongly urged and maintained their ground to convince Your Lordships that the Petitioner was the same person who had committed the alleged foul crimes with the result that the Petitioners' appeal was dismissed, as evident from the judicial records sought to be produced as mentioned above.

"That because the Petitioner had absconded from Police Custody and could not therefore be punished personally, the Respondents caught hold of another citizen, subject to the legal and constitutional protection Your Lordships jurisdiction, Amar Sarup and made him undergo the sentence in spite of his protestations and in spite of . . .

Mr. Speaker: He need not go into it.

Shri G. N. Dixit: I am reading for this purpose to show that this man says that Amar Sarup who was the subject matter of the case was sentenced to death and anged. The hon. High Court has held that this man is not the man who is said to be the subject matter of that case, No. 3 of 1949, pending in the Court of Ambala. This is very relevant because . . .

Mr. Speaker: My request is this.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): What is all this about?

Mr. Speaker: He has given notice of a motion of breach of privilege against Mr Limaye, that he has not taken care before hand. First I am going to request Mr. Dixit that he should not pursue this matter.

Some hon. Members: Why not?

Mr. Speaker: Secondly, I am going to appeal to the hon. Members . . .

Shri Kapur Singh (Ludhiana): We do not like the word "appeal" in relation to a member.

Mr. peaker: I am grateful to him, that he has so much concern for me. The thing is this. Really, I just put it to Mr. Limaye, whether he does not think that he has done harm to me. He ought to have made certain enquiries at least, whether there was a document with him or in the records at least. Was it not proper for him?

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : यह कभी नहीं कहा आपने । आप मुझ को सुनिए । इस में बहुत सावधानी और संयम के साथ और आप की इजाजत से मैं ने हर एक कदम आगे बढ़ाया है । दो गवाह हैं । श्रीमती रेणु चक्रवर्ती और श्री किशन पटनायक। आप मुझे सुनिए । . . . . व्यवधान ।

अध्यक्ष महोदय : अब यह हाउस फैसला करेगा कि जब माननीय सदस्य मेरे पास लिख कर लाते हैं कि आप के बखिलाफ . . . . .

श्री मधु लिमये : मैं ने हस्ताक्षर तक नहीं किया था विशेषाधिकार के प्रस्ताव पर। आप की इजाजत के बिना मैं ने कोई कदम नहीं उठाया है ।

अध्यक्ष महोदय : उस का भी जिक्र सरदार कपूर सिंह के किया । चार दिन उसके बाद पूर लगेगी । और देर आप ने की । आप ने कहा कि यह डाउटफुल कैरेक्टर . . . .

श्री मधु लिमये : मैं ने सन्देश भेजा ।

अध्यक्ष महोदय : आप ने कहा कि यह डाउटफुल कैरेक्टर का आदमी है ।

श्री मधु लिमये : मैं ने आप को इन्फार्मेशन दी थी । अगर मेरे पास . . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप को जानकारी थी कि वह ऐसा आदमी है . . . . . . (व्यवधान)

श्री मधु लिमये : बाद में मिली ।

अध्यक्ष महोदय : अगर आप को खुद इल्म था कि वह ऐसा आदमी है . . . .

श्री मधु लिमये : पहले नहीं था ।

अध्यक्ष महोदय : आप ने उस चिटठी में लिखा है । आप लाये थे । आप ने प्रोफेसर रंगा से . . . .

श्री मधु लिमये : सारा रेकार्ड देखा कर बोलिए । इस तरह इस तरह से नहीं होना चाहिए . . . .

अध्यक्ष महोदय : तो भी आप को चाहिए था, भले ही आप को कुछ मालूम नहीं था, कि आप देख लें कोई डाकुमेंट है या नहीं ।

श्री मधु लिमये : मैं क्यों दबूं । मेरे पास क्या साधन हैं ।. . . (व्यवधान) । हाउस में मैं ने नहीं उठाया । मैं आपके पास आया । बहुत जिम्मेदारी से काम लिया है ।

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : मुझे एक मिनट कहने दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय : मैं आप से बहस नहीं कर रहा हूं । मैं अपना स्टेटमेंट कर रहा हूं कि यह देखिए कि आप मेरे पास लाते हैं कि आप के बखिलाफ 40 हजार लिखा हुआ है एक बही खाते में, एक डाकुमेंट पर । मुझे से यहां कहते हैं कि मैं आप के पास लाया था, मैं हाउस के सामने लाने के लिए नहीं लाया था । तो क्या मैं अपनी तरफ से उस को छिपा सकता हूं । मेरी पोजीशन क्या क्या होती उस वक्त अगर मैं कहता कि मैं इस को हाउस में नहीं लाता । मैं ने उसी वक्त कहा कि आओ चलो, हाउस में पेश करो । श्रीमती रेणु चक्रवर्ती को याद होगा . . . .

श्री मधु लिमये : आप ने क्या सोचा ।

अध्यक्ष महोदय : श्री मधु लिमये ने कहा कि दो तीन दिन ठहर जाओ । . . . . (व्यवधान)

श्री मधु लिमये : यह लिखा हुआ है । इस तरह से गैर जिम्मेदारी से काम नहीं चलेगा ।

अध्यक्ष महोदय : आप बार बार कहते हैं कि लिखा हुआ है । आप ने सर्टिफिकेट उस में लिया, और वह भी यह कि उस ने चिटठी मुझे भेजी है ।

श्री मधु लिमये : और मैं क्या कर सकता हूं ।

अध्यक्ष महोदय यह सर्टिफिकेट जो लिया वह भी गलत । उस के बाद मेरे पास भेजी गई बिना सैंटिस्फाई . . . .

श्री मधु लिमये : मैं ने किया है ।

अध्यक्ष महोदय : आप को सैटिस्फाई होना चाहिए था आया कोई चिट्ठी है या नहीं है । उन का यह काम था मालूम करना कि मेरे पास भेजी गई है या नहीं । मुझे इस बात का बड़ा अफसोस है कि वह समझते हैं कि उन को जो करना था वह उन्होंने कर लिया । यह बात ठीक नहीं है । मैं नहीं चाहता कि इस बात को लम्बा किया जाये । . . . . (व्यवधान) इस साइड से प्रेशर है कि मैं जरूर करूं ।

श्री मधु लिमये : हां, आप इसको कीजिए ।

Shri G. N. Dixit: May I say that I have got the greatest regard for your person? You have adorned the Chair and you have given respect to this Chair. You are an impartial man and a man of integrity. Therefore, it is not a question of not going by your appeal. There is only one condition. If Mr. Limaye tenders an unqualified apology to you and to this House. . . . (*Interruptions*) . . . . . . because I feel that it is the grossest contempt of this House, the grossest contempt that has ever been committed in any Parliament has been committed by Mr. Limaye:

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, यह क्या हो रहा है । क्या यह व्यवस्था का सवाल है ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये । . . . . . (व्यवधान) मुझे उन को सुनने दीजिए । . . . . (व्यवधान)

Members should not get out of control.

श्री रामसिंहलाल व्यास : (उज्जैन) : यह हमारे लिए बोलते हैं कि चुप रहू। क्या इस तरह से यह बोल सकते हैं । उन के ऊपर आपको ऐक्शन लेना चाहिए । हमेशा यह इस तरह से कहते रहते हैं ।

श्री गौर (अलीगढ़): हमें गाली दे रहे हैं।

एक माननीय सदस्य: क्या गाली दे रहे हैं?

श्री गहमरी (गाजीपुर): क्या आप लोग जो चाहें कहते रहें, हम कुछ न कहें आप को। क्या आप को हक है कि सब को आप गाली देते रहें।

15 hrs.

श्री राधेलाल व्यास: चुप रहो, ऐसा इन्होंने कहा है —

अध्यक्ष महोदय: अब आप बैठ जायें।

श्री राधेलाल व्यास: मैं तो बैठ जाऊंगा। लेकिन यह हाउस का अपमान है। इस तरह से किसी मैम्बर को दूसरे मैम्बर को नहीं कहना चाहिए। क्या आप इसको एलाऊ करते हैं? इस तरह से जो मैम्बर कहता है क्या उसके खिलाफ आप एकशन लेने के लिए तैयार हैं। इस तरह से हाउस की प्रोसीडिंग्ज चलनी चाहियें जिससे हाउस की इज्जत बढ़े। इस तरह से जब कहा जाता है तो हाउस की इज्जत खतरे में पड़ जाती है। इस तरह से नहीं चल सकता है। एक मैम्बर दूसरे मैम्बर को ललकार इस तरह से, क्या इसको आप एलाऊ करते हैं? अगर एलाऊ करते हैं तो यह बड़े आश्चर्य की बात है।

Shri M. L. Dwivedi (Hanurpur): He should be asked to withdraw it.

Mr. Speaker: Mr. Vyas should not be so sensitive. These are objectionable words but they had been used so many times; particularly on this occasion it is not fair to ask me to take action on this occasion. This has been said many a time from this side as well as that side. I agree that it should not be said in this manner.

Shri G. N. Dixit: Sir, I want to draw your attention to some facts which will show that what Mr. Madhu Limaye did was an intentional act to malign you; it was not something which he was doing to Mr. Amrik Singh. The judgment of the High Court in which this document was, it is said, referred to was passed on 26-7-1965. It is exactly after one year that a letter of Mr. Amrik Singh is addressed to you and acknowledged by you on the 4th August 1966. On the morrow, the letter of Mr. Madhu Limaye is dated the 5th August 1966. You are the best person to tell us when you received it. From the letters printed in this report, I find the letter is dated the 4th and Mr. Madhu Limaye's letter is dated the 5th August, on the morrow. Obviously and clearly there appears to be, from the circumstantial evidence, enough to warrant that there was a conspiracy between Amrik Singh and Mr. Limaye and it was Mr. Madhu Limaye who originated this idea...... (*Interruptions.*).

श्री किशन पटनायक: इस तरह के आरोप आप एलाऊ करते हैं।

श्री मधु लिमये: पाटिल साहब की तरह भागूंगा नहीं। एक एक का जवाब दूंगा।

Shri G. N. Dixit: I cannot conceive, not only in this House but in any House in the world whatever democracy prevails, such an imputation casting reflection on the Speaker or that a Member will rush to the Speaker to raise a privi'ege issue, and he did it not because he wanted to raise in against Amrik Singh. Because Amrik Singh, came to him and authenticated that letter there was no reason that he should at once rush to the House and waste the time of the House by saying he wanted to punish Amrik Singh. As I have told you, I do not know which Members have met Amrik Singh or who had not met him. At least from the perusal of

[Shri G. N. Dixit]

papers, I think he must have met Shri Madhu Limaye. Knowing full well that that letter was not going against Amrik Singh but that it was going against the integrity of the Speaker and therefore against the integrity of this august House of this country, he raised the issue in this House and the whole world got publicity. According to me, the crime rests in the publicity. The crime does not rest merely in sending a private letter to a private person.

The action of Mr. Limaye to publicise this letter which has sent to you is the main offence which was committed against this august House. It is a contempt and also a breach of privilege. In numerable cases are reported in May's Parliamentary practice holding that reflections on the character of the Speaker had been treated to be the grossest breach of privilege. I will quote from the Commons Debates which arose in 1911. One member wrote a letter to another member; it was a private letter; so long as it was a private letter, it was something which was not known to anybody but the Member sent it to the Press and it was printed and it was censured by the whole House. Two hon. Members who were involved in that case tendered an unqualified apology. Bringing it to the House is a clever manner of publising the thing. I think placing before the House is worse than sending it to the Press. The Prime Minister of England, Mr. Asquith, who was moving this motion said:

> "In these circumstances we cannot help feeling that perhaps we have not got to deal with the writing of the letter for the actual breach of the privilege of this House was committed by publication and not by the sending of a private communication by one person to another."

Mr. Amrik Singh sent you a letter. It was not important. What was important was that Mr. Limaye brought that letter before the House and got it published. He has done what he wanted. In view of these findings of the committee that such a letter has not existed and that Mr. Limaye has abused his power and position as a Member of this House, I move that Mr. Limaye be censured and he should be expelled for the rest of the term.

Shrimati Renu Chakravartty (Barrackpore): Is it not breach of privilege? Why has he added expulsion now?

Mr. Speaker: That has nothing to do with the previous motion. We are not concerned; it is irrelevant.

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, मैं दोनों पर बोलूंगा । इन्होंने एक्सपल्शन का सुझाव दिया है —

अध्यक्ष महोदय : सिर्फ ब्रीच आफ प्रिवलेज इस वक्त हमारे सामने है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) अध्यक्ष महोदय, जो मेरा मोशन है, उसका क्या होगा । मुझे आप स्टार्ट कर लेने दीजिए और फिर आप चाहें तो बहस को कल तक के के लिए स्थगित रख सकते हैं । यह बहुत महत्व की चर्चा है । मैंने बहुत परिश्रम इस पर किया है । इसको शुरू कर दें । और फिर कल तक स्थगित कर दें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है । परन्तु शुरू तो हो जाए ।

अध्यक्ष महोदय : मुझे मालूम नहीं कि लीडर आफ दी हाउस क्या चाहते हैं । जो आप चाहें मुझे कोई एतराज नहीं है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : चालू करवा दें ।

अध्यक्ष महोदय : कौनसी चीज स्टार्ट करवा दूं ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : जो मेरा प्रस्ताव है 7 नवम्बर की घटनाओं के सम्बन्ध में, वह ।

अध्यक्ष महोदय : मैं बाद में माननीय सदस्य को मौका दूंगा ।

Shri G. N. Dixit: I am moving this motion under rule 225. (*Interruption*).

Mr. Speaker: He has given me notice of motion on breach of privilege.

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, अभी श्री दीक्षित ने मुझ पर कई गम्भीर आरोप लगाए हैं —षड्यन्त्र, जान-बूझ कर किसी की बदनामी करना और न जाने कितने दुनिया भर के आरोप उन्होंने मेरे खिलाफ लगाए हैं ।

जहां तक विशेषाधिकार के भंग का सवाल है, मैं आप से निवेदन करना चाहता हूं कि जब यह शख्स मेरे पास आया, तो वह पहली बार आया था । मैं उस को पहले कभी भी नहीं मिला था । जब उसने इस तरह की बातें मेरे सामने रखीं और यह भी कहा कि उसने आप को एक चिट्ठी लिखी है, तो पहले तो मुझे सन्देह हुआ कि उस ने यह चिट्ठी लिखी है या नहीं और क्या यह वह जान-बूझ फंसाना चाहता है । इस तरह के कई लोग अभी भी हैं । आज मैं बहुत गम्भीरता के साथ यह निवेदन करना चाहता हूं कि पाकिस्तान के हाई कमिश्नर के द्वारा लिखे हुए एक पत्र की फ़ोटोस्टेट कापी मेरे पास भेजी गई, जिस में ऐसा-ऐसा मसाला था, जिस में मैं फंस जाऊं । मैं कोई आरोप नहीं लगा रहा हूं, लेकिन चूंकि इधर कई महीनों से मैं ने सरकार की भ्रष्टाचारी नीति का भंडाफोड़ किया है, इसलिए उस तरफ के कई लोग ऐसे हैं, जो सोचते हैं कि मुझे किसी तरह, किसी बात में फंसाया जाये । इस लिए आज पाकिस्तान के हाई कमिश्नर की चिट्ठी का मैंने उल्लेख किया है । मुझे सन्देह है—अभी भी सन्देह है—कि यह बनावटी है, इस लिए मैंने न उस को प्रकाशित किया और न उस का सदन में उल्लेख किया । इस तरह के कई दस्तावेज मेरे पास आते हैं, लेकिन मैं हमेशा बहुत ही संयम और जिम्मेदारी के साथ काम करता हूं ।

जब यह पत्र आया, तो मैंने आप को इस के बारे में लिखित इत्तिला दी, लेकिन मैं ने यहां तक प्रीकाशन लिया या सावधानी बरती थी, कि मैं ने उस वक्त इस पर हस्ताक्षर भी नहीं किया था । मैं श्रीमती रेणु चक्रवर्ती और श्री किशन पटनायक को ले कर आप के पास आया । यह बात सही है कि आप ने कहा कि चूंकि यह आप का व्यक्तिगत मामला है, इस लिए मैं उस को तुरन्त उठाऊं । लेकिन मैं ने कहा—और उस पत्र के अन्त में यह लिखा भी है ।

"However, this being a very grave and important question, I would not like to mention it in the House till I have had an opportunity of discussing the matter with you personally."

उस के बाद भी चार पांच दिन तक मैंने इस के बारे में कोई पहल नहीं की । जब आप के द्वारा मुझे सन्देश मिला कि इस मामले को उठाना चाहिए, ताकि सत्य का पता चले और आप के ऊपर कोई कलंक न रहे, तो आप के कहने पर, आप की इजाजत से, मैंने इस मसले को उठाया । मैं प्रिविलेज के कई मसले आप के पास भेजता हूं । इस सत्र में भी मैं ने तीन चार मसले आप के पास भेजे थे, जिन को उठाने की आप ने इजाजत नहीं दी । पिछले सत्र में कई मसले मैं ने आप की इजाजत से उठाए । श्री एस० के० पाटिल

[श्री मधु लिमये]

के बारे में मेरा एक प्रिविलेज का प्रस्ताव था। आप के साथ कई बार इस की चर्चा हुई। चूंकि आप ने उस की इजाजत नहीं दी, इस लिए मैं ने उस को नहीं उठा सका।

जब मेरा पहला पत्र आप के पास गया, जिस पर हस्ताक्षर नहीं था और मैं श्रीमती रेणु चक्रवर्ती और श्री किशन पटनायक को को ले कर आप के पास आया था, तो उस के बाद मैं ने कर्नल अमरीक सिंह के बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करने की कोशिश की। स्टेट्समैन का जो कटिंग मुझे डा० अणे से मिला था, वह मैंने तुरन्त आप के पास भेज दिया। इतना ही नहीं, मैंने भी सदन में भी कहा था कि डा० अणे से मैं ने सुना है कि प्रोफेसर रंगा को कर्नल अमरीक सिंह के बारे में बहुत बुरा तजुर्बा है, इस लिए आप उस से भी जानकारी प्राप्त कीजिए।

इतना सब करने के बाद मैंने यह प्रस्ताव यहां पर रखा और उस में मैं ने मांग की—भाषण में भी मैं ने मांग की—कि इस आदमी को गिरफ्तार कर के सदन के सामने लाया जाए। आज भी मेरी यही इच्छा थी और इसीलिए मैंने जो रीकमिटल का प्रस्ताव भेजा, उस में मैं ने कहा कि जिन दस्तावेजों की वह बात करता है, आखिरकार उनके बारे में कैसे पता चलेगा, इस लिए उन को समाविष्ट कर के प्रिविलेजिज कमेटी अपनी राय दे कि वे सही हैं या गलत और प्रिविलेजिज कमेटी की जो राय होगी, उस को सदन मानेगा। अभी भी एक दस्तावेज का जिक्र किया गया है, वह शायद उन्हीं में से एक है, जिन की चर्चा की जाती है। उस दस्तावेज की सत्यता की जांच करने के लिए मेरे पास कोई खुफिया विभाग तो नहीं है। मैं इन बातों के बारे में कैसे जानकारी रख सकता हूं? मैं तो इतना ही कर सकता हूं कि मैं ज्यादा से ज्यादा संयम सावधानी और धीरज के साथ इस के बारे में पहल करूं।

मैंने यह भी कहा था कि कर्नल अमरीक सिंह को गिरफ्तार करके लाया जाये। आज भी इस सदन के पास यह अधिकार है कि इस लोक सभा की जो मियाद है, कम से कम उस के खत्म होने तक उस व्यक्ति को जेल में रखा जाये। विशेषाधिकार समिति और इस सदन ने उस अधिकार का इस्तेमाल नहीं किया।

जहां तक जीतपाल आदि लोगों का सवाल है, पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी के कई रपट आए हैं, तरह तरह की बातें इन कम्पनियों के बारे में आती हैं। आखिरकार उस सब के बारे में हम लोगों को कैसे पता चलेगा। मैं आप को दो मिसालें देता हूं कि कैसे पालियामेंट के मैम्बरों को फंसाया जाता है। मेरे पास मधुसूदन गोवर्धन दास के कुछ कागज पड़े हैं, जिन में उन्होंने गलत जानकारी दे कर मैम्बर्ज को गुमराह करने की कोशिश की थी। मैं ने एक गवाह को पास बिठाया और उस के बारे में जांच की। एक मैम्बर मधुसूदन गोवर्धन दास से धोका खा चुके हैं। उन्होंने श्री चनव को एक चिट्ठी लिखी, जिस में उन्होंने कहा कि इम्पोर्ट लाइसेंसिज में जो परितवर्तन किये गये थे, उन में से कुछ परिवर्तन तो बिना अधिकार के थे, लेकिन कुछ परिवर्तन सा-धिकार, अधिकार के साथ, थे। इस तरह की चिट्ठी लिखने के लिए उस मैम्बर को कहा गया, जिनके बारे में मैं ने कहा है कि वह धोका खा चुके हैं। ज्यादा जांच के बाद मुझे पता चला कि इन सब 54 मिलों के इम्पोर्ट लाइसेंसिज में परिवर्तन बिना अधिकार के किया गया है।

मैंने कई दफा आप का ध्यान इस तरफ खींचा है कि इस दिल्ली शहर में बड़े-बड़े पूंजीपतियों और कम्पनियों की तरफ़ से तरह-तरह के लोग कन्ट्रैक्टमैन का काम करते हैं। अच्छा बुरा, सभी किस्म का काम होता है।

आखिरकार सदस्यों का कोई फ़र्ज़ होता है, जनता के प्रति उन की वफ़ादारी होती है। जितनी आवश्यक जानकारी हासिल की जा सकती है, वह मैं हमेशा हासिल करता हूं और सवाल के सब पहलुओं का अध्ययन किये बिना किसी भी मसले को नहीं उठाता हूं।

विशेषाधिकार के प्रश्न के बारे में पूरी जिम्मेदारी आप की है। आप ने कई दफ़ा विशेषाधिकार का प्रश्न नहीं उठाने दिया। कई बार प्रश्न उठाने के बाद आप ने उस को नामन्जूर किया है। कभी-कभी आप के निर्णय से हम सहमत भी नहीं हुए हैं, जैसा कि श्री सुब्रह्मण्यम् के बारे में हुआ।

माननीय सदस्य ने हाउस आफ़ कामन्स का जिक्र किया। जब कोई बात उन के हक़ में होती है, तो वह हाउस आफ़ कामन्स का जिक्र करते हैं। हाउस आफ़ कामन्स में जब प्राफ़ूमो साहब ने, जो युद्ध मंत्री थे, अपने व्यक्तिगत स्पष्टीकरण में असत्य बातें कह दीं--"अनट्रू वर्ड्ज़," नाट "डीलिबरेटली अनट्रू वर्ड्ज", आप ने व्याख्या की है कि "जान-बूझ कर असत्य भाषण" . . . .

अध्यक्ष महोदय : आप "नाट डीलिबरेटली अनट्रू वर्ड्ज़" क्यों कहते हैं।

श्री मधु लिमये : आप ने "डीलिबेट-ली" कहा है।

अध्यक्ष महोदय : वहां भी वही है।

श्री मधु लिमये : वह नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : वहां पर प्रोफ्यूमो के उस लड़की से ताल्लुक के बारे में प्रोफ्यूमो को ही मालूम हो सकता था।

श्री मधु लिमये : मैं ने हाउस आफ कामन्स के जर्नल में पढ़ा है कि प्रोफ्यूमो को इसलिए सजा दी गई कि उस ने असत्य शब्दों का इस्तेमाल किया और खुद टोरी पार्टी के नेता ने अपने मिनिस्टर के खिलाफ वह प्रस्ताव रखा। लेकिन आप के निर्णय के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है।

श्री दीक्षित को मेरा यही जवाब है कि उन्होंने मेरे खिलाफ़ जो आरोप लगाए हैं, वे सरासर ग़लत हैं। जैसा कि मैं ने उस वक्त भी कहा था, सत्य को स्थापित करने और इस सदन की और आप की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए ही मैं ये सब मामले उठाता हूं —मंत्रियों के बारे में भी। मैंने आप को चिट्ठी लिखी थी कि मैं ने श्री मनुभाई शाह और श्री शचीन्द्र चौधरी के खिलाफ जो आरोप लगाए हैं, मैं किसी भी कमेटी के सामने, लोक सभा की कमेटी के सामने, उन को साबित करने के लिए तैयार हूं। अगर मैं उनको साबित नहीं करता हूं, तो आप मुझे जो दण्ड देना चाहें, वह दीजिए, लेकिन अगर वह कमेटी कहती है कि मधु लिमये के आरोप सही हैं, तो फिर आप मंत्री महोदयों को क्या दण्ड देंगे ?

इस बारे में आप ने जो भी फैसला करना है, आप कीजिए। मुझे कोई एतराज नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : इसमें बहस करने की तो मेरे खयाल से जरूरत नहीं है। इस में बहस नहीं चलती है। इस को खत्म करना चाहिए।

श्री मौर्य : कर्नल अमरीक को गिरफ्तार किया जाय (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : जब यहां हाउस ने अप्रूव किया उस कमेटी की रिपोर्ट को तो मैं कैसे गिफ्तार कर सकता हूं। . . . . (**व्यवधान**) आर्डर, आर्डर। अब सवाल सिर्फ इस वक्त यह है मिस्टर दीक्षित का जो मोशन है जिस का नोटिस दिया था उन्होंने वह सिर्फ यह है कि श्री मधु लिमये साहब ने यह बीच

[अध्यक्ष महोदय]

आफ प्रिविलेज किया है, सिर्फ इतना सवाल है मुझे इस सारे मामले में बहुत अजीब सी हालत से गुजरना पड़ा है क्योंकि यह मेरे संबंध में है इसलिए मैंने कहा था दीक्षित साहब को कि इसको यहीं फेंक दें, रहने दें, इस से कोई फायदा नहीं ....

कई माननीय सदस्य : नो, नो ।

अध्यक्ष महोदय : मगर एक बात मैं इस के साथ जरूर कहना चाहता हूं कि मधु लिमये साहब ने अपनी सफाई बहुत जोर से दी, सब चीज की वह एहतियात करते हैं मगर मेरा उन से कहना है कि क्या यह काफी था उन का सर्टिफिकेट कि मैंने हुकम सिंह को लिख दिया है ? उनको यह देखना चाहिए था जो चिट्ठी कहते हैं कि वह है भी या यों ही उसे कह रहे हैं ? वह जो कहा था कि वह चिट्ठी वहां पड़ी है .... (**व्यवधान**) मैं सलाह अपने लिए देता ?....
(**व्यवधान**) ....

श्री बागड़ी : उस वक्त नहीं था तो अब कैसे हो गया (**व्यवधान**)

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : चार दिन तक क्यों पड़ा रहा ?

अध्यक्ष महोदय : बड़ा अफसोस है मुझे मधु लिमये साहब इस का जवाब दें कि चार दिन क्यों पड़ा रहा ? यह क्या मेरा कसूर था ? मुझे कहा जा रहा है कि चार दिन तक क्यों पड़ा रहा ? ...(**व्यवधान**) मुझे बड़ा अफसोस है, एक तरफ तो मधु लिमये सहाब ने खुद कहा

श्री मधु लिमये : मैं ने कहा कि जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए ।

श्री राम सेवक यादव : इसी लिए जब आपने जल्दबाजी नहीं की तो इन को क्यों ...
(**व्यवधान**)

Shri Tyagi (Dehra Dun): I move for closure.

Shri Sheo Narain: Please put it to vote.

श्री मधु लिमये : अगर आप समझते हैं कि आर्डर में है तो दे दीजिए इसको कमेटी के पास ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने कहा था कि अगर हाउस इस से एग्री करे तो इसे छोड़ दिया जाए ।

कई माननीय सदस्य : नो, नो ।

श्री गहमरी : माननीय स्पीकर साहब, मुझे कुछ कहना है ।

अध्यक्ष महोदय : नहीं इस पर बहस नहीं हो सकती ।

श्री गहमरी : आज भी अगर यह कहते हैं कि गलती हो गई, हम अब इस बात को महसूस करते हैं और माफी मांगते हैं तो छोड़ दिया जाय । .... (**व्यवधान**) ....

अध्यक्ष महोदय : तो अगर इस पर जोर देते हैं कि हाउस के सामने रखें तो मैं इसे वोट पर रखता हूं ।

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, आप क्यों नहीं भेज देते हैं ? आप को अधिकार है इस में ।

श्री स० मो० बनर्जी : वोट पर रखने से पहले एक मेरा निवेदन सुन लीजिए ।

Mr. Speaker: I am going to put to the House the motion of Mr. Dixit that Mr. Madhu Limaye has committed a breach of privilege in this respect.

Shri S. M. Banerjee: We want a written motion, Sir.

श्री मधु लिमये : लेकिन आप खुद क्यों नहीं भेज देते ?

Mr. Speaker: It is here. I will read it. This is dated 1st December.

"I give you notice under Rule 223 that I propose to raise a question of privilege tomorrow on 2nd December, 1966 against Shri Madhu Limaye, a member of the House, for maliciously publicising baseless and false imputations against the Hon. Speaker, in the guise of raising an issue of privilege against Col. Amrik Singh, but essentially intending to maligan the Hon. Speaker with a view to intimidate him.".

श्री मधु लिमये : आप खुद क्यों नहीं भेज देते ? ..... (**व्यवधान**) आप क्यों बोल हैं ? मैंने कहा है कि आप भेज दीजिए। मैं डरपोक नहीं हूं। मैं तो कह रहा हूं कि आप भेज दीजिए।

Shrimati Renu Chakravartty: I have already said that we should never bring up something about which we are not completely satisfied that it is true. We have to ensure that the source is reliable, though ultimately we pray not be able to prove everything, conclusively as it has happened in the past in some cases. (*Interruptions*). You remember, Sir, both Mr. Limaye and myself went to see you because it was a serious matter. We discussed it with you. Can it be said that it was done with a malicious intent? It may be a mistake; I admit it. I was the first to admit it on the floor of the House in front of everybody. But I cannot understand how it can be said that it was done with malicious intent.

Shri S. M. Banerjee: On a point of order, Sir. This motion cannot be put before the House under the rules.

Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara): What is the actual proposal you want to put before the House, Sir?

Mr. Speaker: The notice is that Mr. Madhu Limaye has committed a breach of privilege and by bringing that motion against Col. Amrik Singh, he intended to impute motives against the Speaker and question the integrity of the Speaker.

Shri Hari Vishnu Kamath: What is being put to the House, Sir? Is it that leave should be granted or not?

Mr. Speaker: Yes. It is for asking for the leave of the House.

Shri Hari Vishnu Kamath: That means, you have given your consent.

Mr. Speaker: Yes.

Shri Hari Vishnu Kamath: In that case I submit that rule 225 has not been fully complied with. I perfectly agree with you that members should exercise discretion and care while bringing up matters before the House. But here we are up against a fundamental, a basic issue. The motion he has made goes beyond the scope of what he wrote to you. It is something fantastic, objectionable and irrelevant.

He has given notice under rule 223. Then rule 224 comes into operation, Then comes rule 225 which says:

"(1) The Speaker, if he gives consent under rule 222 and holds that the matter proposed to be discussed is in order, shall, after the questions and before the list of business is entered upon, call the member concerned, who shall rise in his place and, while asking for leave to raise the question of privilege, make a short statement relevant thereto:

Provided that where the Speaker has refused his consent under rule 222 or is of opinion that the matter proposed to be discussed is not in order, he

[Shri Hari Vishnu Kamath]

may, if he thinks it necessary, read the notice of question of privilege and state that he refuses consent or holds that the notice of question of privilege is not in order".

Apparently, Sir, you have given your consent to the motion. You read out the motion saying that he has committed a breach of privilege. Then what happens? Under 225(2), if objection to leave being granted is taken...... We said 'no', which means that objection is taken. Before that, there is one proviso which says:

> "Provided further that the Speaker may, if he is satisfied about the urgency of the matter, allow a question of privilege to be raised at any time during the course of a sitting after the disposal of question."

Sub-clause (2) says:

> "If objection to leave being granted is taken, the Speaker shall request those members who are in favour of leave being granted to rise in their places..."

Now, Sir, the motion that he moved is not what is being put to the House by you. He moved something and you are putting to the House something which is different. I do not know if it is in order.

Shrimati Renu Chakravartty: Please read from the records.

Mr. Speaker: At once I said that those words that have been said at the end were not relevant. I have said that.

Shri Hari Vishnu Kamath: With the greatest respect, Sir, may I ask whether it is open to you—I know you have all the powers, you have the residuary powers and even otherwise you have powers—to put to the House a motion that is different from a motion which an hon. Member, who has given notice of it, moves in the House?

Mr. Speaker: The motion moved is the one of which he gave notice, though in his speech he has said certain words that were not relevant at all. That had no bearing on the motion at all.

Shrimati Renu Chakravartty: He has moved his motion. The rule says clearly that he has to move the motion and after that say a few words. What is it that he has moved? Kindly read the records.

Shri Hari Vishnu Kamath: That he be expelled from the House.

Shri G. N. Dixit: What I said in my speech was that that is the punishment which should be awarded to him. But I moved for consent of the House to move a motion of breach of privilege against Shri Madhu Limaye because he has committed a breach of privilege by bringing in this issue of privilege in the matter of Col. Amrik Singh.

Shri S. M. Banerjee: Sir, I rise on a point of order under rule 223. If I have heard Shri Dixit correctly, he delivered a good speech on a privilege motion said to be before the House. He never moved any such motion. Whatever he said was irrelevant and you were pleased to declare the latter portion of his speech as irrelevant. May I invite your kind attention to Rule 224 which says:

> "The right to raise a question of privilege shall be governed by the following conditions, namely:—
>
> (i) not more than one question shall be raised at the same sitting;
>
> (ii) the question shall be restricted to a specific matter of recent occurrence;"

May I remind you, Sir, that the privilege motion given notice of by Shri Daji was not admitted by you because you considered, in your wisdom, that it was not a matter of recent occurrence. When Shri Daji, I remember, said, that he may be late by five minutes because the House was not sitting, you said that even five minutes would matter.

Mr. Speaker: I never said that even if it is five minutes late I would not accept.

Shri S. M. Banerjee: You might have said '5 days'.

Shri Vasudevan Nair (Ambalapuzha): Sir, I rise to a point of order. It is already 3.30. We have to take up the Private Members' Business.

Mr. Speaker: That does not matter. It is for the House to decide. If the House wants it can take up the Private Members' Business. I have no objection. If the House wants to dispose of this and then take up the Private Members' Business....

श्री शिव नारायण : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रस्ताव है कि पहले इसको खत्म किया जाय, उसके बाद प्राइवेट मेम्बर्स बिल को लें।

Shri Vasudevan Nair: Private Members' Business cannot be shelved.

Mr. Speaker: We have many a time taken it up later. We will take it up after half-an-hour.

Shri Hari Vishnu Kamath: That means the House will sit for half-an-hour more.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रस्ताव है कि साढ़े तीन बजे से जो निजी कार्य शुरू होने वाला था, उसको साढ़े चार बजे से लिया जाय और इस तरह से इस के लिए एक घंटा और बढ़ा दिया जाय।

Shrimati Renu Chakravartty: Sir, when will Private Members' Bills be taken up? There are two items. One is the discussion on the incidents of 7th November and the other is Private Members' Bills. If you say that that discussion will be taken up, then the Private Members' Bills will be pushed out.

Mr. Speaker: I have said that he will take one minute to move his motion and then we will take up Private Members' Bills.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : एक घन्टा यदि बढ़ा दिया जाय तो आधा घन्टा इसको मिल जायगा और आधा घन्टा उसको मिल जायगा तथा साढ़े चार बजे से निजी कार्य शुरू किया जाय।

Mr. Speaker: Is the House in favour of taking up Private Members' Business at 4.30?

Several hon. Members: Yes.

Shri S. M. Banerjee: Sir, this is not a specific matter of recent occurrence. Shri Limaye raised a privilege motion on the basis of a photostat copy of a letter which was given to him. Shri Dixit was there in the House. If he thought that it was wrong and Shri Limaye was using certain documents to malign somebody's character, including yourself, Sir, he should have raised some sort of a motion or opposed that motion on that ground. Therefore, I feel that this motion which is said to have been moved by Shri Dixit should not be accepted by the House as a motion, because whatever he has said is quite contrary to what you have placed before this House.

Another point is, the entire thing has been based on a document......

Mr. Speaker: I have understood his point of order, that it is not a matter of recent occurrence.

Shri S. M. Banerjee: Sir, you said that Shri Madhu Limaye also should have verified the document. I only want to mention two cases.

Mr. Speaker: That cannot be a point of order.

Shri S. M. Banerjee: The whole argument is based on this document.

The Deputy Minister in the Ministry of Home Affairs (Shri P. S. Naskar): Let the Privilege Committee decide.

Shri S. M. Banerjee: Sir, I think Shri Naskar should speak in a more responsible way.

Mr. Speaker: But time should not be spent in this discussion like this.

Shri S. M. Banerjee: Sir, kindly hear me. I am only saying that when myself and Shri Daji wanted to place a document, which was supposed to be the audit report on Ruby Insurance and Jupiter Insurance Government had the original of it. Then the CBI Report, on the intervention of Shri Sinhasan Singh, was placed on the Table. Even today, those reports, one by Shri Kamath and another by Shri Daji and myself are there. They are not verified. So, if you really say that such documents should be verified, it will be difficult. I agree that it should be verified.

Mr. Speaker: What is his point of order?

Shri S. M. Banerjee: My point of order is that the motion of Shri Dixit is irrelevant.

श्री मौर्य : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : मैं नहीं सुन सकता। श्री हुमायून कबिर।

श्री मौर्य : मेरा व्यवस्था का प्रश्न आपके खिलाफ है। मैं आपके ऊपर कटाक्ष कर रहा हूं। ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने श्री हुमायून कबिर को बुलाया है।

श्री मौर्य : मैं आप पर कटाक्ष कर रहा हूं। आप मेरे बुजुर्ग हैं, विद्वान हैं, आपके लिये मुझ में इज्जत है, लेकिन मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। आप व्यवस्था के प्रश्न को सुन लीजिये।

अध्यक्ष महोदय : मैं कहता हूं कि मैंने पहले उनको बुलाया है।

श्री मौर्य : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मेरी दर्ख्वास्त है कि इसको बन्द किया जाये। आपको सदन के नेता से पुछने की आवश्यकता नहीं थी। आपको स्वयं अधिकार है कि प्रिविलेज इश्यू को स्वीकार करें या न करें। मैं यह व्यवस्था उठा रहा हूं।

Shri Humayun Kabir (Basirhat): Sir, I want only one minute of your indulgence, and I do not wish at all to intervene in this matter.

Shri C. K. Bhattacharyya (Raiganj): But you are intervening.

Mr. Speaker: That is because I have asked him. That is all right.

Shri Humayun Kabir: After considering the whole matter, you were pleased to say a little while ago that this has been discussed for a long time, and you had desired at one stage that the curtain may be dropped. Now, there is a privilege motion, no doubt, which has referred to intention or malice. Sir, you know better than anyone else in this House, that malice is one of the things which it is very difficult to prove but, on the contrary, whenever the issue of malice is raised, it leads to all kinds of acrimonious debate. This Parliament is coming to an end very soon. Sir, you in your wisdom have appealed to the House that this matter has been sufficiently ventilated, too many things have been said which, perhaps, should not have been said, on both sides of the House tempers have arisen, passions have played a role which, perhaps......

Shri C. K. Bhattacharyya: Not on this side.

Shri Humayun Kabir: I do not wish to provoke anybody. I would appeal to the hon. Members that I am not speaking in passion. I do not want to provoke anybody. I do not know why one hon. Member is trying to discover in my statement something which is not there. I would again appeal to the House that out of deference to your wishes, the whole House should accept the request which you have made and bring to a close the unseemly discussion which does not do any credit to any section of the House.

Mr. Speaker: Has the Leader of the House anything to say in the matter?

The Leader of the House (Shri Satya Narayan Sinha): I came to the House just now. I do not know what happened earlier.

Mr. Speaker: I have made an appeal twice that because it concerns me personally, I do not want to proceed with it personally and so that it may be dropped. The Leader of the House might consider it. Then, I will take the decision. Now, we will take up the motion by Shri Kachavaiyya.

Shri Hari Vishnu Kamath: Sir, I would only request you to ensure that what happened yesterday, which was very unusual, does not happen today also. Yesterday, the Chairman, ruled twice that the debate on the Goa Opinion Poll Bill would be taken up today. So, those who had given notice of amendments left the House, left the Chamber and went home under the impression that it would be taken up today. That decision was later changed and the record shows that it was taken up at 7.20 p.m. I only want to ensure that the same thing does not happen today also. The full time of 2 hours or 2½ hours should be allotted for this discussion, and if it is not completed today, it should be taken up tomorrow morning, not later tonight, which will be very unfair to us. It is wrong to do such things.

Mr. Speaker: I will see. I have understood him. Now, Shri Kachhavaiyya.

Shri Sheo Narain: Now, what is the decision about the motion of Shri Dixit?

Mr. Speaker: I have asked the Leader of the House for his views. After hearing him, I will take it up at some other time.

15.45 hrs.

MOTIONS *RE*: INCIDENTS IN NEW DELHI ON 7TH NOVEMBER, 1966 AND *RE*: BANNING COW SLAUGHTER

श्री हुक्म चन्द कछवाय (देवास) अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

> "कि यह सभा 7 नवम्बर, 1966 को नई दिल्ली में हुई घटनाओं के बारे में 9 नवम्बर, 1966 को गृह-कार्य राज्य मंत्री दवारा दिये गये वक्तव्य पर विचार करती है।"

7 नवम्बर को संदद भवन के सामने जो प्रदर्शन हुआ और उसमें जो घटनायें हुईं और 9 नवम्बर को राज्य मंत्री द्वारा दिये गये वक्तव्य से जो स्थिति उत्पन्न हुई उसके सम्बन्ध में मैं कहना चाहता हूं . . (व्यवधान) कि देश के अन्दर यह भावना है कि गोवध देश के लिए बड़ा कलंक है। इस भावना को लेकर तथा उसको व्यक्त करने के लिये सारे देश से लोग यहां आये कि जो गोवध होता है यह देश के लिये कलंक है। उनके अन्दर यह भावना कुछ महीने पूर्व से ही चल रही थी, परन्तु इस प्रदर्शन . . . .

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट आफ़ आर्डर है ट्रेजरी बेंचेज पर एक ऐसे माननीय